कबीर

कविपरिचय:

कबीर का जन्म काशी में 1398 में हुआ। आप लगभग 120 वर्ष जीवित रहे।कबीर का जब जन्म हुआ, उस समय राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रांति अपने चरम पर थी। इस काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। कबीर ने एक तरफ धर्म के आडंबर का विरोध किया तथा दूसरी तरफ कबीर ने कहा- ईश्वर एक है और वह हर जीवधारी के हृदय में वास करते हैं। कबीर की भक्ति निर्गुण भाव की है।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है, अर्थात् साधु की भाषा है।कबीर की रचनाओं में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, पंजाबी आदि भाषाओं के शब्द हैं,क्योंकि कबीर शास्त्रीय ज्ञान के स्थान पर अनुभव के ज्ञान को महत्व देते थे।

पाठपरिचय:

साखी का अर्थ है साक्षी,अर्थात् प्रत्यक्ष ज्ञान या सीख। कबीर ने अपनी साखियों में जीवन के अनुभवों को पिरोया है तथा कहा है- अहंकार रहित मीठी वाणी से मन में निवास करने वाले को ईश्वर प्राप्त होते हैं तथा व्यक्ति सांसारिक मोह माया को छोड़कर ईश्वर को पाने के लिए यत्न करता है तथा दूसरों को प्रेरणा देता है। कबीर ने अपनी साखी दोहा छंद में लिखी है। दो पंक्ति के दोहे में पहली पंक्ति में 13 वदूसरी पंक्ति में 11 मात्राएं होती हैं।

साखी

1)ऐसी बाँणीबोलिये, मन का आपा खोई।

अपना तन सीतलकरै, औरनकों सुख होई।

शब्दार्थ:-बाँणी- वाणी, वचन, शब्द, आपा- अहंकार, घमंड, तन- शरीर (मन),सीतल-शीतल, आनंद, सुख, औरन-दूसरों को, सुख -खुशी

व्याख्या:- कवि का कहना है- ऐसे वचन बोलने चाहिए जिससे मन का अहंकार दूर हो जाए,अर्थात् व्यक्ति को अहंकार रहित मीठे वचन बोलने चाहिए, जिससे अपने तन अर्थात् मन को तो आनंद प्राप्त होता ही है साथ ही सुनने वाले को भी प्रसन्नता मिलती है।

भाषासौंदर्य:-

1) सरल सहज सधुक्कड़ीभाषा
2) दोहा छंद
3) वाणी बोलिये में अनुप्रास अलंकार
4) भक्ति भाव, शांत रस

2)कस्तूरी कुंडलिबसै, मृग ढूँढै बन माँहि।

ऐसे घटिघटिराँम है, दुनिया देखैनाँहिं।।

शब्दार्थ:- कस्तूरी- एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ,कुंडलि-नाभी,मृग-हिरण, घटि-हृदय, राम -ईश्वर, दुनिया -संसार के लोग

व्याख्या:- कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरण की नाभी में होता है, परंतु अज्ञानी हिरण उसे सारे जंगल में खोजता है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर व्यक्ति के हृदय में ही निवास करते हैं, परंतु अज्ञानी मनुष्य उसे मंदिर, मस्जिद, तीर्थ-स्थानों पर खोजता है, अपने हृदय में नहीं।

भाषासौंदर्य:-

1) सरल सधुक्कड़ीभाषा
2) दोहा छंद
3) कस्तूरी कुंडलि, दुनिया देखैमें अनुप्रास अलंकार, घटि घटि पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

3) जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।

सब अंधियारा मिट गया, जब दीपक देखा माँहि।।

- शब्दार्थ :- मैं -मनुष्य का अहंकार, हरि- ईश्वर, अंधियारा -अज्ञानता का अहंकार,दीपक- ज्ञान का दीपक,माँहि- हृदय में

व्याख्या:- जब मुझ में अहंकार था तब मुझे ईश्वर प्राप्त नहीं हुए थे, परंतु जब मेरे हृदय में से अज्ञानता का अंधकार मिट गया तब मेरा अहंकार नष्ट हो गया तथा मुझे ईश्वर प्राप्त हो गए।

भाषासौंदर्य:-

1) सरल सधुक्कड़ी भाषा
2) दोहा छंद
3) प्रतीकों का सुंदर प्रयोग: मैं -अहंकार का प्रतीक, अंधकार-अज्ञान का प्रतीक,दीपक- ज्ञान का प्रतीक।
4) दीपक देख्या में अनुप्रास अलंकार

4)सुखिया सब संसार है, खायैअरुसोवै।

दुखिया दास कबीर है,जागैअरुरोवै।।

व्याख्या:- कवि कबीर कहते हैं संसार के लोग सांसारिकता में डूबे हैं, खाते -पीते और सोते हैं तथा बड़े सुखी हैं। कबीर दास जैसे कुछ ईश्वर के भक्त यह सोचकर दुखी होते हैं कि संसार नश्वर है, अज्ञानी व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त करने का यत्न क्यों नहीं करता।

शब्दार्थ:-सुखिया- सुखी,अरु- और,दास- ईश्वर के भक्त।

भाषासौंदर्य:-

1) सरल सधुक्कड़ी भाषा

2) दोहा छंद

3)सुखिया सब संसार, दुखिया दास में अनुप्रास अलंकार

5)बिरह भुवंगमतनबसै, मंत्रनलागै कोई।

राम वियोगी नाजिवै, जिवैतो बौरा होई।।

शब्दार्थ:- बिरह- वियोग (किसी की याद में तड़पना), भुवंगम-साँप, तन -शरीर, बसै- बसता है, मंत्र -उपाय,लागै-लगता है,जिवै- जीता है, बौरा -पागल।

व्याख्या:- कबीरदास कहते हैं कि जिसके शरीर में ईश्वर के वियोग रूपीसाँप निवास करता है, उस पर किसी प्रकार का उपाय काम नहीं करता अर्थात् जो व्यक्ति ईश्वर के वियोग में तड़पता है वह व्यक्ति या तो जीवित ही नहीं रहता, अगर जीवित रहता भी है तो पागल हो जाता है। हर स्थान पर ईश्वर को खोजता है और ईश्वर को पाने के उपाय खोजता है और कुछ नहीं करता।

भाषासौंदर्य:-

1)सधुक्कड़ी भाषा

2) दोहा छंद

3) बिरह भुवंगममें रूपक अलंकार

4)भुवंगम(साँप) वियोग का प्रतीक है।

6) निंदक नेड़ाराखिये,आँगणिकुटीबँधाइ।
बिन साबणपाँणी बिना, निरमलकरैसुभाइ।।

शब्दार्थ:-निंदक- निंदा करने वाला,नेड़ा- निकट, आँगणि-आंगन, बिन -बिना,साबण-पाणि-साबुन और पानी,निरमल- निर्मल,सुभाइ- स्वभाव,कुटी-झोपड़ी(घर में स्थान देना)

व्याख्या:-कवि का कहना है कि निंदा करने वाले व्यक्ति को अपने निकट ही रखना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर उसे अपने घर में भी स्थान देना चाहिए, क्योंकि कपड़े स्वच्छ निर्मल विकार रहित बनाने के लिए साबुन की आवश्यकता होती है, परंतु निंदक व्यक्ति हमारे स्वभाव को बिना साबुन और पानी के ही निर्मल बना देता है क्योंकि निंदा करने वाले की निंदा के डर से हम अपने स्वभाव की कमियां दूर करते जाते हैं।

भाषासौंदर्य:-

1) सधुक्कड़ीभाषा
2) दोहा छंद
3) निंदक नेड़ा में अनुप्रास अलंकार

7) पोथी पढ़िपढ़ि जग मुवा,

पंडित भया न कोइ।

ऐकैअषिरपीवका,

पढ़ैसुपंडित होइ।।

शब्दार्थ:- पोथी -धार्मिक पुस्तकें,पंडित- ज्ञानी, ऐकै-एक, अषिर- अक्षर, पीव-ईश्वर

व्याख्या:-धार्मिक पुस्तकें पढ़ पढ़ कर अनेक ज्ञानी मर गए,अर्थात्धार्मिक पुस्तकें पढ़ने वाले अनेक ज्ञानी इस संसार में आए और चले गए परंतु वेज्ञानी नहीं कहलाए,पर जिस ने ईश्वर के विषय में एक अक्षर पढ़ लिया वह ज्ञानी हो गया, अर्थात् जो ईश्वर के विषय में थोड़ा सा भी ज्ञान रखता है वही ज्ञानी है।

भाषासौंदर्य:-

1) सधुक्कड़ीभाषा
2) दोहा छंद
3) पढ़िपढ़िपुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

8) हम घर जाल्याआपणाँ, लिया मुराड़ाहाथि।

अब घर जालौंतास का,जेचलै हमारे साथ।।

शब्दार्थ:- हम -मैंने, जाल्या-जलाया, आपणाँ- अपना,मुराड़ा-जलती हुई लकड़ी,ताश – उनका, जे-जो।

व्याख्या:- कविकहते हैं मेरे हाथ में भक्ति की जलती हुई लकड़ी है, जिससे मैंने अपनी सांसारिक विषय-वासनाओं को जला लिया है। अब जो मेरे साथ चलना चाहते हैं, मैं उनके हृदय से भी सांसारिक विषय-वासनाओं को नष्ट कर दूंगा और उनमें भक्ति भाव जगा दूंगा।

भाषासौंदर्य:-

1) सधुक्कड़ीभाषा

2) दोहा छंद

3) भक्ति भाव

4) शांत रस

प्रश्नउत्तर

प्रश्न 1)मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन की शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर-मीठे वचन बोलने से सुनने वाले को प्रसन्नता होती है। केवल इतना ही नहीं, मीठे वचन बोलने वाले को भी प्रसन्नता प्राप्त होती है, क्योंकि वह अहंकार रहित मीठे वचन बोलता है।

प्रश्न 2)दीपक दिखाई देने पर अंधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- जब व्यक्ति के हृदय में ज्ञान का दीपक जल जाता है, तब उसके हृदय का सारा अहंकार नष्ट हो जाता है। उसकी अज्ञानता का अंधकार नष्ट हो जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए ईश्वर को प्राप्त करना आसान हो जाता है।

प्रश्न 3) ईश्वर कण- कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उत्तर- ईश्वर कण- कण मेंप्रत्येक जीवधारी के हृदय में निवास करते हैं, परंतु व्यक्ति अपनी अज्ञानता के कारण आडंबर करता है, ईश्वर को मंदिर,तीर्थ- स्थानों पर ढूंढता है, इसीलिए हम उसे देख नहीं पाते।

प्रश्न 4) संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहां सोना और जागना किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यह क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सांसारिकता में लिप्त व्यक्ति इस संसार में सुखी है तथा ईश्वर को खोजने वाले व्यक्ति संसार के लोगों कोसांसारिकतामें लिप्त देख कर दुखी होते हैं।

यहां सोना प्रतीक है सांसारिकता में लिप्त होने का तथा ईश्वर से दूर होने का औरजागना ईश्वर के प्रति आस्था रखने का प्रतीक है। इसका प्रयोग सांसारिकता में लिप्त व्यक्तियों और ईश्वर में लिप्त व्यक्तियों के विषय में बताने के लिए किया गया है।

प्रश्न 5) अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर-अपने स्वभाव को निर्मल बनाने के लिए कबीर ने यह उपाय बताया है कि निंदा करने वाले व्यक्ति को अपने पास रखना चाहिए तथा अपने घर में स्थान देना चाहिए अर्थात् निंदक की निंदा से डरना नहीं चाहिए, क्योंकि उसकी निंदा के डर से हम अपने स्वभाव की कमियों को दूर करते हैं और अच्छे स्वभाव के हो जाते हैं।

प्रश्न 6)ऐकैअषिरपीवकापढ़ैसुपंडित होइ। इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- कवि का कहना है केवल धार्मिक पुस्तकें पढ़ लेने से कोई व्यक्ति ज्ञानी नहीं हो जाता। ज्ञानी वह है जो केवल एक अक्षर ईश्वर के विषय में जानता है,अर्थात् थोड़ा सा ईश्वर के विषय में जानता है।

प्रश्न 7) कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीर का अपनी भाषा पर जबरदस्त अधिकारहै, इसीलिए डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें वाणी का डिक्टेटर कहा है।

कबीर ने अपनी साखियों में दोहा छंद का प्रयोग किया है। आपकी भाषा सधुक्कड़ीहै। इसमें अवधी, ब्रज, खड़ी बोली, पूर्वी हिंदी, पंजाबी आदि के शब्द हैं। कवि ने देशज शब्दों का भी सुंदर प्रयोग किया है, जैसे -शीतल को सीतल कहा है, विरह को बिरह कहा है। कवि ने स्थान- स्थान पर अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग किया है,जैसे- घटि घटि पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार निंदक नेड़ा में अनुप्रास अलंकार तथा बिरहभुवंगम में रूपक अलंकार। कबीर ने उपदेशात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

प्रश्न8) कबीर ने सच्चा भक्त किसे कहा है?

उत्तर- जो ईश्वर की भक्ति में लीन है, ईश्वर के विरह में तड़प रहा है तथाआडंबरोंमें विश्वास नहीं करता, वही सच्चा भक्त है।

प्रश्न9) लाखों ग्रंथ पढ़ने पर भी लोग पंडित क्यों नहीं बनते हैं?

उत्तर- क्योंकि वह केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करते हैं, ईश्वर के विषय में जानने का यत्न ही नहीं करते। केवल एक अक्षर ईश्वर का जान लेना ही काफी है।

प्रश्न10) कबीर ने ईश्वर का निवास कहाँ बताया है?

उत्तर- कबीर के अनुसार ईश्वर का निवास कण- कण में है तथा प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में है, परंतु अज्ञानी व्यक्ति ईश्वर को मंदिर आदि में ढूंढता है तथा ईश्वर को पाने के लिए दिखावा करता है।

प्रश्न11) विरह रूपी सर्प कबीर के अनुसार कौन है और मंत्र किसे कहा गया है?

उत्तर- जिस प्रकार सर्प के विष का प्रभाव व्यक्ति के शरीर पर पड़ता है औरउचित इलाज ना होने पर व्यक्ति जीवित नहीं रहता, ठीक उसी प्रकार ईश्वर का विरह भी सर्प की तरह है अर्थात् ईश्वर के विरह में तड़प ने वाला व्यक्ति या तो जीता ही नहीं। अगर जीवित रहता भी है, तो ईश्वर के लिए तड़पता ही रहता है, उस पर किसी मंत्र का असर नहीं होता।

प्रश्न12) अपने अंदर का दीपक दिखाई देने पर कौन-सा अंधियारा कैसे मिट जाता है?

उत्तर- कबीर के अनुसार व्यक्ति के अंदर जब ज्ञान का दीपक जल जाता है, तब अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है।जब ऐसा होता है, तब व्यक्ति अपना अहंकार छोड़ देता है तथा उसे सहज ही ईश्वर प्राप्त हो जाते हैं।

प्रश्न13)कबीर दास की साखियों के मुख्य उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

कबीर अपनी साखियों के द्वारा संदेश देना चाहते हैं :-

1. ईश्वर कण-कण अर्थात् प्रत्येक जीवधारी में हैं।
2. ईश्वर को पाने के लिए आडंबर करने की आवश्यकता नहीं है।

3. ईश्वर को पाने के लिए धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं। वह तो केवल स्मरण मात्र से प्राप्त हो जाते हैं।
4. ईश्वर को पाने के लिए मीठे वचन बोलने चाहिए तथा अहंकार का त्याग कर देना चाहिए।
5. निंदा करने वाले व्यक्ति से घबराना नहीं चाहिए। उसे अपने पास ही रखना चाहिए। उससे अपने स्वभाव के विकार दूर हो जाते हैं।

____